Sem-1 MJC / MIC / IDC

अर्थशास्त्र एक परिचय

अर्थशास्त्र के संदर्भ में विभिन्न अर्थशास्त्रियों के विचार:

↳ दुर्लभता संबंधी परिभाषा :-

दुर्लभता संबंधी परिभाषा देने वाले अर्थशास्त्रियों में प्रमुख रूप से रॉबिन्स का नाम पहले आता है। इन्होंने अपने एक नए दृष्टिकोण से अर्थशास्त्र की परिभाषा प्रस्तुत किया। इन्होंने अपनी पुस्तक 'An ESSay on the Nature and Significance of Economic Science' में बताया कि आर्थिक जीवन में हम साधनों की सीमितता Scarcity की समस्या से जूझते रहते हैं। फलस्वरूप हमारे सामने चयन की मुख्य समस्या होती है। हमें अपनी आवश्यकता के आधार पर उसका चुनाव करते हुए उसकी संतुष्टि करनी होती है। चूंकि साधनों के भी वैकल्पिक प्रयोग होते हैं इसलिए उनके मूल्य भी चयन करना होता है। इससे यह स्पष्ट है कि 'दुर्लभता और चयन' दोनों ही एक साथ चलते हैं। अर्थात् आवश्यकताओं की सीमित साधनों के बीच हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति समय-समय पर उनकी प्राथमिकताओं के आधार पर होती रहती है। इसीलिए रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को चयन का विज्ञान (economics is the logic of choice) कहा है।

* रॉबिन्स ने जीवन की मूल सच्चाई पर ध्यान दिया उन्होंने धन और मानव कल्याण दोनों पर ध्यान देने के बजाय मनुष्य की असीमित आवश्यकताओं और सीमित साधनों के बीच संबंध (तालमेल) स्थापित करने का प्रयास किया। हालांकि स्टिग्लर, फ्रीडमैन, केयर्नक्रास जैसे अर्थशास्त्रियों ने रॉबिन्स का समर्थन किया है।

* रॉबिन्स के अनुसार - "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जिसके अंतर्गत सीमित और वैकल्पिक प्रयोग वाले साधनों से संबंधित मानव के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।"

→ रॉबिन्स की परिभाषा की व्याख्या मुख्यतः चार तथ्यों के आधार पर की जा सकती है।

---

(1) असीमित आवश्यकताएं - मानव की आवश्यकताएं अनंत होती हैं। मनुष्य की ये आदत होती है कि जब उसकी एक आवश्यकता की पूर्ति होती है तभी दूसरी आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है। वह संतुष्ट ही नहीं हो पाता। फलस्वरूप आवश्यकताओं के यह क्रम जीवन पर्यंत चलता रहता है।

2. साधनों की सीमितता - साधनों की सीमितता है लेकिन मनुष्य उन साधनों की उपयोगिता वैकल्पिक आधार पर भी कर सकता है। साधनों की सीमितता के कारण मनुष्य अपनी कुछ ही आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है। ऐसी स्थिति में उसे इस बात का चुनाव करना होता है कि वह अपनी उन आवश्यकताओं में से किसकी पूर्ति करे और किसी नहीं।

3. सीमित साधनों के वैकल्पिक प्रयोग - साधनों की सीमितता है लेकिन मनुष्य उन साधनों की उपयोगिता वैकल्पिक आधार पर भी कर सकता है। जैसे- भूमि का उपयोग खेती में या फैक्ट्री के लिए किया जा सकता है। इसी तरह अन्य सीमित साधनों का उपयोग वैकल्पिक आधार पर अवश्य किया जा सकता है।

(4). आवश्यकताओं की तीव्रता का भिन्न होना —

प्राय: मनुष्य की आवश्यकताओं की तीव्रता भिन्न-भिन्न होती है। अत: मनुष्य प्राथमिकता के आधार पर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु साधनों का चयन करता है। अर्थात मनुष्य पहले अपनी उन आवश्यकताओं की पूर्ति करता है जिनकी तीव्रता अधिक होती है। बाकि को स्थगित कर देता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि असीमित (अनंत) आवश्यकताओं तथा सीमित और वैकल्पिक प्रयोग वाले साधनों के बीच मानवों का व्यवहार 'चयन करने' या निर्णय लेने से संबंधित होता है।

चुनाव करने की इस प्रक्रिया को रॉबिन्स ने 'आर्थिकसमस्या' नाम दिया। इस प्रकार रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को "चयन का विज्ञान" (economics is the logic of choice) कहते हुए वैज्ञानिक, मानवीय और सर्वभौमिक बना दिया है।